शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण महिलाओं के विकास में प्रसार की भूमिका

सुनिता ठोंबरे (शोधार्थी)
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

प्रसार कार्य एक शिक्षण पद्धति है जिसकी सहायता से व्यक्तियों की मनोवृत्ति, आचार-विचार, व्यवहार व ज्ञान में परिवर्तन लाया जा सकता है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जो व्यक्ति को जागरूक और आत्म विश्वासी तो बनाता ही है, साथ ही उसे ज़िन्दगी को समझने का व्यापक दृष्टिकोण भी प्रदान करता है अर्थात् शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को साक्षर करने से एक व्यक्ति साक्षर होता है जबकि एक शिक्षित महिला अपने घर-परिवार और आसपास के सम्पूर्ण परिवेश को साक्षर बनाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण महिलाओं के विकास में प्रसार की भूमिका को रेखांकित किया गया है।

भूमिका

ग्रामीणों के विकास को हम यदि व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह लाखों गाँवों मेंरहने वाले करोड़ों व्यक्तियों के आर्थिक और सामाजिक विकास से सम्बन्धित सचेत तथा योजनाबद्ध प्रयास की आवश्यकता को प्रतिपादित करता है। शिक्षा राष्ट्र या समाज के विकास की आधार शिला है। कोई राष्ट्र या समाज बिना शिक्षा के विकसित नहीं हो सकता। शिक्षा न केवल महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं बल्कि नारी को नई सोच एवं दिशा प्रदान करने में अपनी अहम् भूमिका निभाती है जिससे ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा का स्तर पहले की अपेक्षा बेहतर हुआ है। भारत के उपराष्ट्रपति व शिक्षा शास्त्री डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था कि शिक्षित महिला के बिना पुरूष शिक्षित हो ही नहीं सकता।

ग्रामीण क्षेत्र में महिला शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

इतिहास इस बात का साक्षी है कि समाज में जब-जब स्त्री को शिक्षा के पूर्ण अवसर प्राप्त हुए हैं, हमारा समाज सभ्यता एवं संस्कृति के चरमोत्कर्ष पर रहा है। चाहे वह वैदिक काल हो या बौद्धकाल शिक्षित महिलाओं ने गहराई के साथ समाज के बुनियादी ढांचे को प्रभावित किया व अपनी सक्रिय उपस्थिति का परिचय देते हुए समाज व राष्ट्र के निर्माण में अपनी सक्रिय सहभागिता निभाई। जब-जब महिला शिक्षा का स्तर गिरा है, तब-तब महिला का ही नहीं समाज का भी पतन हुआ है।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो महिला को जागरूक और आत्मविश्वासी तो बनाता है साथ ही साथ उसे ज़िन्दगी को समझने में व्यापक दृष्टिकोण भी प्रदान करता है अर्थात् शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का साधन हैं ऐसा माना जाता है कि एक पुरूष को साक्षर करने से एक व्यक्ति साक्षर होता है जबकि एक शिक्षित स्त्री अपने घर-परिवार और आसपास के सम्पूर्ण परिवेश को साक्षर बनाती है। माता शिशु की पहली गुरु होती है। बच्चे के शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास में माँ का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वास्तव में शिक्षित अच्छी माताओं से अच्छे परिवार, परिवार से

समाज और अच्छे समाज से अच्छे राष्ट्र का निर्माण होता है। कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र के विकास, तरक्की, उन्नति प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से स्त्री के विकास से जुड़ी है और नारी के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

शैक्षिक स्तर की दृष्टि से देखें तो प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा से जुड़ी अनेक भारतीय युवतियों की सोच में बदलाव आया है और वे आज बड़े-बड़े पदों पर बैठकर अथवा व्यवसायों, कंपनियों, कार्यालयों का संचालन करती हुई बखूबी अपने दायित्वों का निर्वाह कर रही है। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की शिक्षा एवं उनकी क्षमताओं का संवर्धन न केवल अपने आप में महत्वपूर्ण है बल्कि देश के आर्थिक विकास का एक मात्र व सर्वोत्तम माध्यम है।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान भी स्त्री शिक्षा का विकास होता रहा। बाद में महिलाओं को अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने के लिए अधिनियम और कानून बनाए गए। समय-समय पर इनमें भी संशोधन किया गया है। आज ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का समाज के हर क्षेत्र में उसका परोक्ष-अपरोक्ष रूप से प्रवेश हो चुका है। आज तो कई ऐसी संस्थायें हैं, जिन्हें केवल महिला ही संचालित कर रही हैं। ग्रामीण क्षेत्र में महिलायें सफलता के शिखर पर आरूढ हो रही हैं। कामयाबी के साथ उनकी सामाजिक व आर्थिक तस्वीर लगातार बदल रही है। आज ग्रामीण क्षेत्र में समाज के सभी पुरूष में महिलाओं ने शानदार प्रवेश किया है। आज कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं जहाँ सिर्फ महिलाओं का ही चयन किया जाता है। वर्तमान स्थिति में महिलाओं ने जो साहस का परिचय दिया है।

ग्रामीण क्षेत्र में महिला शिक्षा के बढ़ते आँकड़े और हर क्षेत्र में उनकी बढ़ती भागीदारी यकीनन एक नई उम्मीद जगाती है। क्योंकि महिलाओं के लिए अपना स्वतन्त्र अस्तित्व गढ़ने और उसे कायम रखने के लिए उनका स्वावलंबी और आत्मनिर्भर होना जरूरी है। शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों को लेकर भी सजग होती हैं।

ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं में आज शिक्षा का स्तर भी सुधरा है एवं जागरूकता भी बढ़ी है। भारतीय महिलायें संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भांति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती है। आज पुरूषों के एकाधिकार वाले क्षेत्रों को मिथक तोडकर महिलायें उस क्षेत्र में भी प्रवेश कर रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में समाज सुधारकों के प्रयास से महिला शिक्षा को प्रारंभ किया गया। आज विभिन्न आयु-समूहों की लड़कियाँ स्कूल एवं कालेज की शिक्षा प्राप्त कर रही है, जिससे उच्च शिक्षित महिलाओं में सामाजिक चेतना का विकास हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.डा रामशकल पाण्डेय, डॉ.. करूणाशंकर मिश्र-भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यायें-पूर्व विभागाध्यक्ष शिक्षा शास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2.गुरसरनदास त्यागी-भारत में शिक्षा का विकास-पूर्व अध्यक्ष एवं डीन शिक्षा संकाय, दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग

3.रामशकल पाण्डेय -भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास प्रोफेसर तथा अध्यक्ष शिक्षा शास्त्र विभाग एवं अधिष्ठाता, कलासंकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

4.भाई योगेन्द्रजीत, डॉ..आर.पी.सिंह, डॉ.. के.पी. श्रीवास्तव-शिक्षा में आधुनिक प्रवृत्तियाँ -विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा